Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा- नौवीं

विषय- हिन्दी साहित्य
शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक- एकांकी संचय

पाठ-५ 'सूखी डाली' (एकांकी) लेखक-उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो:-
" मैं कहा करता हूँ न बेटा - - - - - यह परिवार बरगद के इस महान पेड़ की भाँति है।" (पाठ्य पुस्तक पृ० सं० 48)

प्रश्न 1. वक्ता कौन है ? उसके मन में ये विचार किस घटना को देखकर आए ?

उत्तर- प्रस्तुत अवतरण के वक्ता 'सूखी डाली' एकांकी के प्रमुख पात्र दादा मूलराज जी हैं।

दोपहर के भोजन के बाद जब दादा जी आराम कर रहे थे उनका मँझला बेटा कर्मचंद उनके पैर दबा रहा है। तब उन्होंने परिवार के छोटे बच्चों को बरगद के पेड़ की एक टूटी डाली को आँगन में मिट्टी में दबाकर पानी देते हुए देखा। बच्चों की इस नादानी को देखकर वे हँसते हैं और कहते हैं कि ये बच्चे इस बात को नहीं जानते कि पेड़ की टूटी डाली जल देने से नहीं पनपती। वे आगे कहते हैं कि मैं कहा करता हूँ न बेटा कि एक बार वृक्ष से जो डाली टूट गई, उसे लाख पानी दो, उसमें वह सरसता न आएगी और हमारा यह परिवार बरगद के इस महान पेड़ की भाँति है।

प्रश्न 2. वक्ता ने अपने परिवार की तुलना बरगद के पेड़ से क्यों की है?

उत्तर- दादा जी अपने परिवार की तुलना बरगद के पेड़ से इसलिए करते हैं क्योंकि उनका परिवार बड़ा और भरा-पूरा है। वे अपने परिवार के एक ऐसे मुखिया हैं, जिनकी बात सब मानते हैं। जिस प्रकार बरगद का पेड़ फलता-फूलता है और अनेक वर्षों तक जीवित रहता है, उसी प्रकार वे कामना करते हैं कि

उनका परिवार भी फलता-फूलता रहे।

प्रश्न 3. "एक बार वृक्ष से जो डाली टूट गई, उसे लाख पानी दो, उसमें वह सरसता न आएगी" - इस कथन से वक्ता का क्या आशय है?

उत्तर- उपर्युक्त कथन से दादा जी का आशय है कि जिस प्रकार एक बार वृक्ष से जो डाली टूट जाती है उसको कितना ही पानी दो, वह हरी नहीं बनी रह सकती। उसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति परिवार से अलग हो जाता है तो वह फल-फूल नहीं सकता।

प्रश्न 4. उपर्युक्त कथन किस एकांकी से लिया गया है? उसमें एकांकीकार ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर- उपर्युक्त कथन 'सूखी डाली' एकांकी से लिया गया है। इस एकांकी में लेखक ने बताया है कि संयुक्त परिवार में सदस्यों में एकता तथा एक-दूसरे के प्रति प्रेम व आदर की भावना का होना बहुत ज़रूरी है। इस एकांकी के द्वारा लेखक ने यह संदेश दिया है कि यदि परिवार का मुखिया दूरदर्शी, बुद्धिमान तथा व्यवहार-कुशल हो तो परिवार के सदस्यों के विचारों एवं स्वभाव में भिन्नता होते हुए भी वे सब एकता की डोर में बँधे रहते हैं।

2. तुम्हारी बहू को रजाई के अबरे और मलमल का थान पसंद नहीं आया। तुम्हारे ताऊ जी ठहरे पुराने समय के आदमी, वे नए फैशन की चीज़ें खरीदना क्या जाने?"

प्रश्न 1. उपर्युक्त कथन किसने, किससे तथा किस संदर्भ में कहा है?

उत्तर- उपर्युक्त कथन दादा जी मूलराज ने अपने पोते परेश से कहा है। जब दादा जी को उनके मँझले बेटे कर्मचंद से यह मालूम हुआ था कि परेश की पत्नी बेला को कर्मचन्द द्वारा लाए गए रजाई के अबरे और मलमल का थान पसंद नहीं आया है। यह बात मालूम होने पर वे अपने पति परेश से कहते हैं कि तुम्हारे ताऊ पुराने ज़माने के आदमी हैं, वे नए फैशन की चीज़ें खरीदना नहीं जानते।

प्रश्न 2. रजाई के अबरे और मलमल के थान के अलावा बहू को कौन-सी चीज़ पसंद नहीं थी?

उत्तर- रजाई के अबरे और मलमल के थान के अलावा बहू अर्थात् परेश की पत्नी बेला को घर का फर्नीचर भी पसंद नहीं था। कर्मचन्द के अनुसार बेला के मन में दर्प की मात्रा ज़रूरत से ज़्यादा है। वह अपने मायके के घराने को इस घराने से बड़ा, पढ़ा-लिखा और सभ्य समझती है। इसी के चलते वह अपने ससुराल के घराने को घृणा की दृष्टि से देखती है।

प्रश्न 3. 'ताऊ' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? उन्होंने दादा जी से 'बहू' के संबंध में क्या बात कही थी?

उत्तर- 'ताऊ' शब्द का प्रयोग दादाजी ने अपने मँझले बेटे कर्मचन्द के लिए किया है, कर्मचन्द परेश के ताऊ हैं। 'ताऊ' ने दादाजी से 'बहू' अर्थात् बेला के संबंध में यह बात कही कि छोटी बहू के मन में दर्प की मात्रा बहुत ज्यादा है। उनके दुवारा लाए गए रजाई के अबरे और मलमल के थान परिवार की सभी स्त्रियों ने रख लिए हैं लेकिन बेला को वे पसंद नहीं आए। वह अपने मायके के घराने को शायद इस घराने से बड़ा समझती है और इस घर को घृणा की दृष्टि से देखती है। उसे इस घर में सबके साथ रहना पसंद नहीं है। वह परिवार से अलग होकर अपनी गृहस्थी अलग बसाना चाहती है।

प्रश्न 4. वक्ता ने श्रोता को इस समस्या से निपटने के लिए क्या सुझाव दिया?

उत्तर- वक्ता अर्थात् दादा जी ने श्रोता अर्थात् परेश को इस समस्या से निपटने के लिए यह सुझाव दिया कि वह बेला को बाज़ार ले जाए और उसे उसकी पसंद के कपड़े दिला लाए।

[अंतिम पृष्ठ]